नवम्बर 2017

वर्ष : 1 अंक : 2

सिफरी मासिक समाचार

मात्स्यिकी के गौरवशाली 70 वर्ष

निदेशक की कलम से

इस महीने संस्थान ने पूर्वी चम्पारण के मन मत्स्यजिवियो के लिए 3 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम मोतिहारी में आयोजित किया, इस कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया ।इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने संस्थान के वैज्ञानिको एवं प्रशिक्षण ले रहे सभी मत्स्यजिवियो का भी उत्साहवर्धन किया।

संस्थान ने आई सी ए आर एन ए एस एफ के अंतर्गत तीन दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया। संस्थान ने पूर्व एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्रो में स्थित आई सी ए आर संस्थानों के सतर्कता अधिकारिओ, प्रशासनिक अधिकारिओ एवं वित्त एवं लेखा अधिकारिओ की समीक्षा बैठक का आयोजन किया।

डॉ पंजाब सिंह, पूर्व सचिव डेयर एवं महानिदेशक आई सी ए आर, श्री छबिलेन्द्र राउल, सचिव आई सी ए आर, डॉ. पि के अग्रवाल, सहायक महानिदेशक, एनएएसएफ, डॉ.सुधीर रायजादा, सहायक निदेशक, अंतर्स्थलीय मातस्यिकी, एवं अन्य एन ए एस एफ के अधिकार प्राप्त समिति के सदस्यों ने संस्थान भ्रमण किया एवं वैज्ञानिको से बातचीत की।

मै संस्थान की ओर से जोनल खेलकूद में भाग ले रहे सभी प्रतियोगियो को हार्दिक शुभकामनाये देता हूँ और आशा करता हूँ की वे अधिक से अधिक पदक प्राप्त कर संस्थान को गौरवान्वित करेंगे। संस्थान की ओर से आई एफ ए एफ 2017 में भाग ले रहे सभी वैज्ञानिको को हार्दिक शुभकामनाये

मुख्य शोध उपलब्धियां

हिमाचल प्रदेश के पोंग जलाशय, में स्थापित एच.डी.पी.ई.पिंजरे (6मी. X 4मी. X 4मी.) में पिंजरा आधारित मत्स्य पालन के माध्यम से *पंगासायनोडॉन हाइपोफथलमस* (औसत प्रारंभिक वजन 2.54 ग्रा) ने पांच महीनों में (55% की जीवित रहने की दर से) 642.6 ± 107.28 ग्राम का औसत भार प्राप्त किया जिससे संकेत मिलता हैं कि हिमाचल प्रदेश के जलाशयों में पिंजरा आधारित मत्स्य पालन से भोजन योग्य मछली का उत्पादन व्यवहारिक है।

इलेक्ट्रॉनिक डेटा अधिग्रहण प्रणाली (ईडीएएस) का उपयोग करते हुए अप्रैल-अगस्त 2017 के दौरान टुंगा जलाशय से कुल अनुमानित 15.0 टन मत्स्य प्रग्रहण की गणना की गयी। टुंगा जलाशय से एकत्रित मत्स्य प्रग्रहण के आंकड़े दर्शाते है कि मत्स्य प्रग्रहण में अधिकतम रोहु (24.3%) उसके बाद कैटफ़िश (20.3%), मृगल (9.5%), कटला (4.6%) और विविध मछलियों ने कुल पकड़ में 40.9% योगदान दिया।

बंगाल की खाड़ी में वायुमंडलीय अवसाद और पूर्वी हवाओं के कारण इस महीने पश्चिम बंगाल, ओडिशा और निचले ब्रह्मपुत्र नदी क्षेत्र के तट पर हिल्सा प्रग्रहण मे जबर्दस्त उछाल देख गया| इसके कारण हिल्सा के कीमत में जबर्दस्त ग़िरावादा दर्ज की गयी। जबकी सितंबर माह में यह 150-300 रुपये प्रति किलोग्राम में उपलब्ध थी।

मछली स्वास्थ्य प्रबंधन में संभावित उपयोग के लिए वनस्पति स्रोतों से प्रोबायोटिक्स पदार्थो को निकाला और शुद्ध किया गया है।

हिल्सा प्रजनन और प्रबंधन पर एक कार्यशाला

आ.ई.सी.ए.आर.-राष्ट्रीय कृषि विज्ञान निधि, नई दिल्ली और आई.सी.ए.आर. केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने संयुक्त रूप से संस्थान के मुख्यालय बैरकपुर में 24 से 26 अक्टूबर के दौरान "हिल्सा प्रजनन और प्रबंधन: भविष्य के मार्ग" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला एक बहु-संस्थागत परियोजना "हिल्सा मछली का बंद-प्रजनन, बीज उत्पादन और स्टॉक विशेषीकरण" के अंतर्गत आयोजित की गयी जिसको एन.ए.एस.एफ. द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गयी है । इस कार्यशाला में सम्बन्धित सभी संस्थान जैसे सी.आई.बी.ए., सी.आई.एफ.ए., सी.आई.एफ.ई., सी.एम.एफ.आर.आई., एन.बी.एफ.जी.आर. और विश्वभारती विश्वविद्यालय के सम्बन्धित अधिकारियों और वैज्ञानिको ने भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. पंजाब सिंह, अधिकार प्राप्त समिति के अध्यक्ष, एन.एस.एफ़. और पूर्व महानिदेशक, आई.सी.ए.आर. ने 24 अक्टूबर को किया। डॉ. पी. के. अग्रवाल, ए.डी.जी., एन.ए.एस.एफ.; डॉ. एस. रायजादा, सहायक महानिदेशक(अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), आई.सी.ए.आर.; एन.एस.एफ. के अधिकार प्राप्त समिति के अन्य सदस्य, एन.बी.आर.आई., लखनऊ के पूर्व निदेशक डा. राकेश तुली; डॉ. सी. एल. आचार्य, पूर्व निदेशक, आई.आई.आई.एस., भोपाल; और सी.आई.पी.एच.ई.टी., लुधियाना के पूर्व निदेशक डॉ. आर. टी. पाटील और इसमें एन.ए.एस.एफ. परियोजना की सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. के. के. वास, इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। अन्य गणमान्य व्यक्ति जैसे सी.आई.एफ.ए., भुवनेश्वर के निदेशक डॉ. जे.के. सुंदरिया; डॉ. सप्तर्षी विश्वास, उप निदेशक, मत्स्य पालन विभाग, पश्चिम बंगाल; प्रो अमलेश चौधरी, पूर्व प्रमुख, कोलकत्ता विश्वविद्यालय और डॉ. डी. के. डे, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त)

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर. आई. जैसे मत्स्य शोधकर्ता इस अवसर पर उपस्थित थे। सी.आई.एफ.आर.आई. के वैज्ञानिक और तकनीकी अधिकारी भी इस समारोह में शामिल हुए। मेजबान संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और इस परियोजना की गतिविधियों और संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। अपने स्वागत भाषण में डॉ. दास ने हिल्सा परियोजना के अंतर्गत विभिन्न पहलुओं पर हो रहे शोध कार्यो को और आगे बढ़ाने के लिए अपना समर्थन दिया | डॉ. पंजाब सिंह ने परियोजना में हुई प्रगति की सराहना की और हिल्सा पर अधिक शोध कार्यों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। डा. अग्रवाल ने एन.ए.एस.एफ. की गतिविधियों और कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी| डॉ. रायजादा ने अपनी टिप्पणी में हिल्सा मछली की प्रजातियों के महत्व पर प्रकाश डाला और इसके प्रजनन और पालन पर निरंतर शोध कार्यो की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यशाला में उपस्थित परियोजना अन्वेषक डॉ. वी.आर. सुरेश ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि और गणमान्य व्यक्तियों ने एक पुस्तक 'हिल्सा की वर्तमान स्थिति' और ' सिफरी हिंदी मासिक पत्रिका - मात्स्यिकि के 70 गौरवशाली वर्ष' का विमोचन किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया जिसमे परियोजना से जुड़े सभी वैज्ञानिको ने परियोजना की प्रगति और उपलब्धियो पर अपने विचार प्रस्तुत किये। 25 अक्टूबर 2017 को सभी प्रतिनिधियों ने सी.आई.एफ.ए. के आर.आर.सी. में हिल्सा प्रयोगात्मक इकाइयों का दौरा किया और तालाबों में बनाए गए जिन्दा हिल्सा स्टॉक का निरीक्षण किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान के द्वारा बिहार के पूर्वी

चम्पारण जिले के मत्स्य पालको के लिए 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि विज्ञानं केंद्र, पीपराकोठी मोतिहारी में 6-8 अक्टूबर को आयोजित किया

गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ बसंत कुमार दास ने किया। डा. दास ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान चार मन के मत्स्य पालको को प्रशिक्षित करके इन जलक्षेत्रो से मत्स्य उत्पादन वृद्धि का प्रयास कर रहा है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन माननीय श्री राधा मोहन सिंह जी, केन्द्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण के द्वारा किया गया। माननीय मंत्री जी ने मत्स्य

पालको को केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान द्वारा संचालित मन विकास परियोजना से होने वाले लाभ की जानकारी दी। मंत्री महोदय ने मत्स्य पालको को प्रशिक्षण पूर्ण करने का प्रमाणपत्र प्रदान किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मझरिया एवं सिरसा मन के 78 मत्स्यपालको ने भाग लिया।

2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर के बीच बिहार राज्य के लखीसराय जिले के 23 मछुआरों को लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसके अन्तर्गत उनको अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

आदिवासी उप-योजना के अन्तर्गत गतिविधियाँ

संस्थान ने 16-18 अक्टूबर, के दौरान सुंदरबन, पश्चिम बंगाल के सागर द्वीप में स्थित आदिवासी क्षेत्रो में कई गतिविधियों की शुरुआत की | इसके अंतर्गत कई महत्वपूर्ण विषयो जैसे तालाबों में मछली उत्पादकता को कैसे बढ़ाया जाये और आदिवासियों की आय में कैसे वृद्धि की जाये, विषय पर गहन चिंतन किया गया। आई.सी.ए.आर. - सी.आई.एफ.आर.आई. ने एक आदिवासी उप-योजना

(टी.एस.पी.) के अंतर्गत, तीन गांवों में जमीनी-स्तर पर नेटवर्किंग विकसित करने की शुरूआत की। इस परियोजना के अंतर्गत सागर द्वीप के तीन विभिन्न गांवों मंसोग्राम, गंगासागर और खानशेबाब्द के 30 किसानो/मछुआरों के बीच मत्स्य आहार का वितरण किया। इस के अन्तर्गत मंसोग्राम में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पंचायत प्रधान और सागर पंचायत समिति के अन्य सदस्यों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में पुरुष मछुआरों के साथ आदिवासी महिला मछुआरों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

संस्थान के विशेषज्ञ डॉ. लियथुमुलाइया, डॉ. संजय भौमिक और श्री सी.एन.मुखर्जी ने जनजातीय मछुआरों को पोस्ट-स्टॉकिंग प्रबंधन की क्रियाओ की जानकारी और प्रशिक्षण दिया। इन गांवों के जलस्त्रोत जैसें तालाबो के लिए

विशेषरूप से "मत्स्य पालन प्रबंधन के अंतर्गत उत्पादकता में वृद्धि के लिए सही आहार का प्रयोग" विषय पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम डॉ. बी.के. दास, संस्थान के निदेशक एवं परियोजना के अध्यक्ष और डॉ. पी.के.परिडा, वैज्ञानिक और नोडल-अधिकारी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

संस्थान ने 26 अक्टूबर को सुंदरबन के सागर द्वीप, में एक जन जागरूकता सह किसान वैज्ञानिक इंटरफेस कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें आदिवासी उप-योजना के तहत तीन गांवों के आदिवासी मछुआरों ने भाग लिया। इस जन जागरूकता अभियान में संस्थान के वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन प्रबंधन द्वारा आजीविका में सुधार के लिए मछुआरों से चर्चा की। इस अवसर पर डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व महनिदेशक, आईसीएआर ने आदिवासी मछुआरों के साथ बातचीत की। इस अवसर पर अन्य गणमान्य व्यक्ति, डॉ. एस. रायजादा, सहायक महनिदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), आई सी ए आर; डा. पी. के. अग्रवाल, साहयक महनिदेशक, एनएएसएफ, आईसीएआर; डॉ. आर. टी. पाटिल, पूर्व निदेशक, आईसीएआर सीआईपीएचईटी; डॉ. आर. तुली, पूर्व निदेशक आईसीएआर-

आईआईएसएस; डॉ.सी.एल. आचार्य, पूर्व निदेशक, आईसीएआर-एनबीआरआई और डॉ. बी. के. दास, निदेशक, आईएसीआर-सीआईएफआरआई ने भी मौजूद मछुआरों को बहुमूल्य जानकारी और सुझाव दिये। सागर पंचायत समिति के अध्यक्ष श्रीमती अनीता मैत्री ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और सागर द्वीप में संस्थान की टीएसपी गतिविधि की सराहना की।

संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने वैज्ञानिक विधि से मछली पालन के महत्व पर जोर दिया और बताया कि किस तरह संस्थान की पहल ने सागर द्वीप के खसरामकर गांव में मछली उत्पादन पद्धति को बदल दिया है। पूर्व महनिदेशक आईसीएआर ने किसानों को बेहतर आजीविका और भावी पीढ़ी के लिए कृषि प्रणाली में सुधार के लिए आईसीएआर वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों और सुझावों का पालन करने की सलाह दी। इस अवसर पर

उपस्थित डॉ। पंजाब सिंह और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने आदिवासी मछुआरों को मत्स्य प्रग्रहण के उपकरण भी वितरित किये।

युवा हिल्सा का संरक्षण

12 अक्टूबर, को 24 परगना (दक्षिण) पश्चिम बंगाल के नामखाना ब्लॉक में आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर.आई., बैरकपुर द्वारा आयोजित तटीय सुंदरबन के हुगली मातला के मुहाने स्थित प्रणालियों में युवा हिल्सा के मत्स्य संरक्षण के लिए एक दिन का जन-जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। डॉ. बी. के. दास, निदेशक, सी.आई.एफ.आर.आई. ने इस अभियान का उद्घाटन करते हुए कहा की इस तरह के एक बड़े कार्य को करने के लिए केंद्रीय सरकार के साथ अन्य सरकारे भी समग्र दृष्टिकोण के साथ चले |

आई.सी.ए.आर. में आने वाले समस्त मत्स्य संस्थानों ने, भारत के तटीय राज्यों जैसे डी.ओ.एफ, गुजरात, ओडिशा, पश्चिम बंगाल आदि, एन.जी.ओ., बी.ओ.पी., कृषि और किसान कल्याण जैसे मंत्रालयों ने, एम.पी.आर.ए. आदि ने भी इस संदर्भ में अपना सहयोग दिया | उन्होंने हिल्सा मछली को पकड़ने के लिए विराम की अवधि पुनः दोहराने कि आवश्यकता पर भी जोर दिया | ताकि हिल्सा व्यवसाय में जुड़े हुए सभी मछुआरों को समान अवसर मुहैया कराया जा सके। श्री सुशील दास, सचिव, फ्रेसरगंज हार्बर, ने बंगाल के तटीय क्षेत्रो में युवा मछलियों को लगातार पकड़ने के विनाशकारी प्रभाव उपस्थित लोगो के बीच उठाया, जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव 'बेग नेट' के इस्तेमाल द्वारा हो रहा है | हिल्सा मछली का आवास बहुत तेजी से नष्ट हो रहा हैं। उन्होंने यह भी बताया कि चूंकि 150 से 200 ग्राम के आकार के समूह में हर साल मध्य सितंबर से मध्य अक्टूबर में बड़े पैमाने पर मछली का प्रग्रहण किया जाता है, जिसमें से 80% ही परिपक्व हो पाती है जिसका प्रमुख कारण अलग-अलग तरह के तनाव होते है| निदेशक, सी.आई.एफ.आर.आई. ने आश्वासन दिया कि शोध विश्लेषणो के माध्यम से इस तरह के तनाव का पता लगाएंगे | इस कार्यक्रम में 10 महिलाओं सहित लगभग 150 मछुआरों ने सक्रिय भाग लिया। डॉ. बी. पी. मोहंती, प्रधान वैज्ञानिक ने अपने विचार-विमर्श में मछुआरों को एस.आई.एफ. के उत्पादन के लिए ब्लॉक के नहर प्रणाली सहित अपने घरों के तालाबों का उपयोग करने का आग्रह किया। इससे बंगाल

के इस ग्रामीण क्षेत्र में कुपोषण को खत्म करने में बहुत सहायता मिल सकती है और मछुआरों को वैकल्पिक आजीविका भी उपलब्ध होगी। इस कार्यक्रम को डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और उनकी टीम ने अच्छी तरह समन्वित किया था।

आईसीएआर संस्थानों के सतर्कता अधिकारियों की समीक्षा बैठक

10 अक्टूबर को आई.सी.ए.आर.- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैराकपुर में आयोजित पूर्वी और उत्तर पूर्वी क्षेत्र के 19 आई.सी.ए.आर. संस्थानों के सतर्कता अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारी, वित्त और खाता अधिकारियों की समीक्षा बैठक। आई.सी.ए.आर. के अतिरिक्त सचिव, डी.ए.आर.ई और सचिव छबिलेन्द्र राउल ने बैठक की अध्यक्षता की। श्री राजन अग्रवाल, निदेशक, डी.ए.आर.ई और चीफ सतर्कता अधिकारी, आई.सी.ए.आर. , श्री वीपी कत्याल, निदेशक वर्क्स, एस के सिन्हा, उप सचिव सतर्कता बैठक में मौजूद थे। संस्थान के निदेशक डॉ बी के दास ने सचिव,

आई.सी.ए.आर. और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में बीते वर्षों की विभिन्न

उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में स्थित 19-आई.सी.ए.आर. संस्थानों के 60 से अधिक सतर्कता, प्रशासनिक और वित्त और लेखा अधिकारी ने समीक्षा बैठक में भाग लिया। सीपीडब्ल्यूडी के पूर्वी क्षेत्र के वरिष्ठ अधिकारी भी समीक्षा बैठक में उपस्थित थे। इस बैठक में लंबित लेखापरीक्षा पैरा, प्रमुख उपकरणों और प्रोप्राइटरी वस्तुओं की खरीद और संस्थान सतर्कता मामले चर्चा के प्रमुख अंक थे। श्री छाबेलेंद्र राउल सचिव, आई.सी.ए.आर. ने अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता के महत्व के बारे में जानकारी दी और सभा को सूचित किया कि हमरी जाँच भारत के नियंत्रक और महालेखा परिछक द्वारा की जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि सार्वजनिक धन खर्च करने पर हमें जवाबदेह होना होगा। उन्होंने प्रतिभागियों

को आईसीएआर मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मिलकर इस समीक्षा बैठक को सकारात्मक समृद्ध बनाने के लिए कहा। इस अवसर पर, आईसीएआर के सचिव, श्री छबिलेन्द्र राउल ने भी नई आईसीएआर-सीआईएफआरआई वेबसाइट का उद्घाटन भी किया।

श्री राजन अग्रवाल, डी.ए.आर.ई. और सी.वी.ओ के निदेशक, आई.सीएआर निदेशक ने सतर्कता पर विभिन्न पहलुओं पर ध्यान दिया। श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

महत्वपूर्ण बैठके

संस्थान के वैज्ञानिको ने मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एन.एफ.डी.बी. हैदराबाद,

प्रमुख सचिव (मत्स्यिकी) बिहार एवं निदेशक (मत्स्यिकी) बिहार के साथ बिहार के पूर्वी चंपारण में चल रहे मन विकास परियोजना के बारे में 25 सितंबर को पटना, बिहार में बैठक की।

25-26 सितंबर को संस्थान के वैज्ञानिको ने मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एनएफडीबी हैदराबाद, मोतिहारी जिले के स्थानीय मत्स्य अधिकारियों एवं मछुआरों के साथ मिलकर बिहार राज्य के चार मन के हितधरको के साथ बैठक की।

संस्थान के निदेशक डॉ बी. के. दास एवं डॉ बी. पी. मोहंती नाई ने उत्तर प्रदेश मत्स्य विभाग द्वारा आयोजित की गई कार्यशाला "नील क्रांति के द्वारा मछुआरो और किसानों की आय दुगनी करने के अवसर और संभावनाएं " में भाग लिया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने ओडिशा में भुवनेश्वर, ओडिशा में ओडिशा कृषि समाज, भुवनेश्वर द्वारा 16 अक्टूबर, 2017 को आयोजित विश्व खाद्य दिवस समारोह समारोह में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

30 अक्तूबर, को सुश्री इजर मिड्टकंडल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी काउंसलर, रॉयल नॉर्वेजियन दूतावास, डॉ. वेल्मुरुगु पुवानेंद्रन, वरिष्ठ वैज्ञानिक नोफीमा, डा. एटल मोर्टेसेन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, नोफिमा, डॉ. जया कुमारी, वैज्ञानिक, नोफिमा के साथ अनुसंधान परियोजना सहयोग के अवसरों के बारे में चर्चा की।

सम्मान

उड़ीसा कृषक समाज ने 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर आयोजीत समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ बसंत कुमार दास को

मत्स्यपालन के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए “कृषक गौरव” सम्मान से सम्मानित किया। संस्थान के ही दो अति वरिष्ठ वैज्ञानिको डॉ. विमल प्रसन्ना मोहन्ती एवं डॉ अर्चन कान्ति दास को मत्स्य विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए “कृषक बन्धु” पुरुश्कर से सम्मानित किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान के मुख्यालय के सभी स्टाफ सदस्यो को 30 अक्टूबर को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत, निदेशक डॉ. बी. के. दास द्वारा निष्ठा की शपथ दिलवायी गयी। संस्थान के परिसर में भ्रष्टाचार की बुराइयों / बुरे प्रभावो को विभिन्न नारो, पोस्टरो को लगाया गया। दूसरे दिन 31 अक्टूबर को, एक निबंध प्रतियोगिता का

आयोजन स्टाफ और शोध छात्रों के बीच किया गया। इस प्रतियोगिता में स्टाफ सदस्यो ने उत्तसाहपूर्वक भाग लिया। इसी दौरान एक मानव श्रृंखला का भी आयोजन किया गया।

संस्थान के कोलकाता केंद्र पर भी सतर्कता सप्ताह का आयोजन किया गया । केंद्र की प्रभारी अधिकारी डॉ अर्चना सिन्हा ने संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास एवं विशिष्ठ अतिथि श्री एन. पी. साहू, उपाधीक्षक केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो, कोलकाता एवं अन्य अधिकारिओ एवं कर्मचारियों का इस समारोह में स्वागत किया । इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ बी के दास ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियो को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई । डॉ. बी. के. दास, निदेशक ने वर्तमान समय में सतर्कता सप्ताह के आयोजन की महत्ता बताई एवं साथ ही लोगो को भ्रष्टाचार से दूर रहने की सलाह दी । डॉ. दास ने लोगो को भ्रष्टाचार के बारे में शिक्षित करने एवं रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर जोर दिया । विशिष्ठ अतिथि श्री एन पी साहू ने आज के समय में भयावह हो रही भ्रष्टाचार की समस्या को रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रेषित विभिन्न अनुच्छेद एवं वर्ग की जानकारी दी । उन्होंने 1988 के भ्रष्टाचार निवारण कानून की बारीकियो के बारे में उपस्थित कर्मचारीयों को अवगत कराया । डॉ. एस. के. दास प्रधान वैज्ञानिक ने सभा के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया ।

विदेशी दौरे

डॉ. बी. के. बेहरा, प्रधान वैज्ञानिक "एंडीवेर रिसर्च फैलोशिप 2017" के अंतर्गत संसथान की तरफ से रॉयल मेलबोर्न इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, यूनिवर्सिटी मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया में लघु अवधि के लिए पोस्ट डॉक्टरल रिसर्च प्रोग्राम में भाग लेने के लिए दिनांक 02.10.2017 को रवाना हुये।

डॉ. अमीय कुमार साहू, वैज्ञानिक एक विदेश दौरे के अंतर्गत “एशिया प्रशांत में एक्वाकल्चर सेंटर नेटवर्क (एन.ए.सी.ए.)”, वियतनाम, में 29 अक्टूबर, 2017 से 8 नवंबर 2017 तक "कल्चर बेस्ड फिशरीज " विषय पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया |

सुश्री अंजना इक्का, वैज्ञानिक, ने नेताजी सुभाष-आई.सी.ए.आर. अंतर्राष्ट्रीय फैलोशिप 2016-17 हासिल की और इसके तहत पीएचडी करने के लिए नेल्टालेंड द डेल्फ़्ट यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, नीदरलैंड रवाना हुई जिसकी अवधि 1 नवंबर, 2017 से 31 अक्टूबर 2020 तक की है |

आने वाले कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान एवं खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ) रोम आपसी सहयोग से एक कार्यशाला "फिश

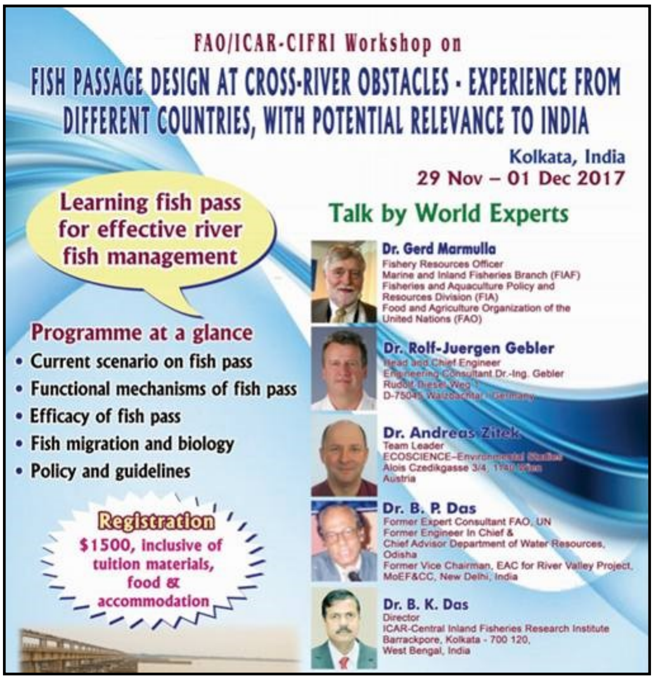

पासेज एट क्रॉस- रिवर ओबसटेकलस—ऍक्सपीरियन्स फ्राम डिफरेन्ट कन्टरीज विद पोटेन्शियल रिलेवेन्स टू इन्डिया का आयोजन 29 नवंबर से 1 दिसम्बर के मध्य केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, में कर रहा है।

सम्पादक मंडल की तरफ से

संस्थान की मासिक हिंदी पत्रिका का दूसरा अंक आपके समछ प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । हिंदी दिवस के अवसर पर सितम्बर मास में प्रथम अंक का अनावरण किया गया था, आशा है आपको हमारा यह प्रथम प्रयास अवश्य अच्छा लगा होगा । प्रत्येक अंक में कुछ त्रुटिया रह जाती है, हमारा सदैव प्रयास त्रुटियों को कम करने पर रहेगा । इस अंक में संपादक मंडल ने अक्टूबर मास की सभी मुख्य गतिविधिओ को स्थान दिया है । माननीय केन्द्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री के द्वारा संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रम में आकर हमारे कार्यो की सराहना करना एक सुखद अनुभूति प्रदान करता है । आई सी ए आर के पूर्व महानिदेशक डॉ पंजाब सिंह ने इस मासिक पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन किया, संपादक मंडल उन्हें और संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास को धन्यवाद ज्ञापित करता है ।

अक्टूबर महीने में जोनल खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन आई सी ए आर रिसर्च काम्प्लेक्स पटना में किया जा रहा है, संपादक मंडल की ओर से प्रतियोगिता में भाग ले रहे सभी प्रतियोगियो को हार्दिक शुभकामनाये । आई एफ ए एफ का आयोजन कोच्ची में किया जा रहा है, प्रतिभागिता करने वाले सभी वैज्ञानिक साथियो को हार्दिक शुभकामनाये ।

अंत में आपके समक्ष यह अंक प्रस्तुत है, आपके प्रतिक्रिया (फीडबैक) का इंतजार रहेगा ।

प्रकाशक मंडल

प्रकाशक: डा. बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमर साहू, श्री प्रवीन मौर्य, श्री गणेश चंद्र

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुश्री सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी :श्री सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in